CHAPTER
1.1

History of the Profession of Pharmacy in India

LEARNING OBJECTIVES

(i) Introduction
(ii) Ancient Period (Before 19th Century)
(iii) British Period (19th Century)
(iv) Early 20th Century (1900–1947)
(v) Post-Independence Period (After 1947)
(vi) Modern Period (1980 – Present)
(vii) Current Scenario

History of the Profession of Pharmacy in India

The **profession of pharmacy in India** has evolved significantly over the years — from traditional healing systems and crude drug use to a modern scientific and regulated profession. Below is a detailed overview of its historical development:

---

1. Ancient Period (Before 19th Century)

- **Traditional Medicine Systems:**
  In ancient India, medical practices were mainly based on **Ayurveda**, **Unani**, and **Siddha** systems.
  Practitioners (known as **Vaidyas**, **Hakims**, or **Siddhars**) prepared their own medicines from natural sources like plants, animals, and minerals.
- **Classical Texts:**
  - *Charaka Samhita* (by Charaka)
  - *Sushruta Samhita* (by Sushruta)
  - *Ashtanga Hridaya* (by Vagbhata)
    These texts described methods for the **collection, preparation, and storage** of drugs — early forms of **pharmacy practice**.

---

2. British Period (19th Century)

- During the British rule, Western medicine and pharmacy were introduced in India.
- Medicines were **imported from Britain**, and there were **no qualified pharmacists** or **formal education** in pharmacy in India.
- **Dispensing of drugs** was mainly done by **compounders** trained under doctors — not by professional pharmacists.
- Around **1880**, a few **hospitals** started training compounders informally.

---

3. Early 20th Century (1900–1947)

- **1910–1920:**
  Increasing demand for trained pharmacists led to the introduction of **formal training programs** in pharmacy.
- **1932:**
  The **Bengal Chemical and Pharmaceutical Works** was established by **Acharya Prafulla Chandra Ray**, marking the beginning of indigenous drug manufacturing in India.
- **1937:**
  The **Banaras Hindu University (BHU)** started the **first degree course in pharmacy** (B.Pharm).
- **1940:**
  The **Drugs and Cosmetics Act** was passed to regulate the import, manufacture, and distribution of drugs.

---

4. Post-Independence Period (After 1947)

- **1948:**
  The **Pharmacy Act, 1948** was enacted — a landmark in Indian pharmacy history.
  - It provided the legal framework for **education**, **registration**, and **practice** of pharmacists.
  - The **Pharmacy Council of India (PCI)** was established to regulate pharmacy education and practice.
- **1954:**
  The **All India Council for Technical Education (AICTE)** was set up, which also started supervising technical education in pharmacy.
- **1960–1980:**
  Growth of **pharmaceutical industries** like Ranbaxy, Cipla, and Hindustan Antibiotics.

- Introduction of **Diploma (D.Pharm)** and **Bachelor of Pharmacy (B.Pharm)** programs in many universities.
- Focus on **self-reliance** in drug production.

---

5. Modern Period (1980 – Present)

- **1990s:**
  Liberalization of the Indian economy led to rapid growth in the **pharmaceutical sector** and **export** of generic drugs.
- **2000s–2020s:**
  - Expansion of **Pharm.D** (Doctor of Pharmacy) programs to strengthen clinical pharmacy and hospital practice.
  - Emphasis on **Good Manufacturing Practices (GMP)**, **Research & Development (R&D)**, and **pharmacovigilance**.
  - India became known as the **"Pharmacy of the World"** due to its major role in generic drug production.

---

6. Current Scenario

- India ranks among the **top global producers** of pharmaceuticals.
- Pharmacy has diversified into several fields:
  - **Pharmaceutical technology**
  - **Clinical pharmacy**
  - **Regulatory affairs**
  - **Pharmacovigilance**
  - **Pharmacoeconomics**
- **Pharmacists** now play a crucial role in **healthcare**, **research**, **education**, and **drug regulation**.

भारत में फार्मेसी व्यवसाय का इतिहास

भारत में फार्मेसी का इतिहास बहुत पुराना है। यह परंपरागत आयुर्वेदिक औषधि निर्माण से शुरू होकर आज आधुनिक वैज्ञानिक और तकनीकी फार्मेसी तक विकसित हो चुका है। नीचे इसके विभिन्न कालों के अनुसार विकास का वर्णन किया गया है —

---

1. प्राचीन काल (19वीं सदी से पहले)

- भारत में चिकित्सा पद्धति मुख्य रूप से **आयुर्वेद**, **यूनानी**, और **सिद्ध** प्रणालियों पर आधारित थी।
- उस समय औषधियों को प्राकृतिक स्रोतों — **पौधे, पशु एवं खनिज पदार्थों** — से तैयार किया जाता था।
- औषधि तैयार करने वाले को **वैद्य**, **हकीम**, या **सिद्धाचार्य** कहा जाता था।
- प्रमुख ग्रंथ:
    - **चरक संहिता** – औषध निर्माण और उपयोग का विस्तृत वर्णन।
    - **सुश्रुत संहिता** – शल्य चिकित्सा और औषध निर्माण विधियाँ।
    - **अष्टांग हृदयम** – औषध संग्रह, तैयारी और भंडारण के नियम।

 इस काल में फार्मेसी का कार्य वैद्य स्वयं करते थे — दवाइयों का संग्रह, निर्माण और वितरण।

---

2. ब्रिटिश काल (19वीं सदी)

- ब्रिटिश शासन के दौरान भारत में **पाश्चात्य चिकित्सा प्रणाली (Allopathy)** का प्रवेश हुआ।
- दवाइयाँ मुख्यतः **इंग्लैंड से आयात** की जाती थीं।
- उस समय प्रशिक्षित फार्मासिस्ट नहीं थे, बल्कि **कंपाउंडर (Compounder)** डॉक्टरों के अधीन रहकर दवाइयाँ बनाते थे।
- **1880** के आसपास कुछ अस्पतालों में कंपाउंडरों को औपचारिक प्रशिक्षण देना शुरू हुआ।

---

3. आधुनिक शिक्षा की शुरुआत (1900–1947)

- **1910–1920:** फार्मेसी शिक्षा की आवश्यकता महसूस की जाने लगी।
- **1932:** भारत के प्रसिद्ध वैज्ञानिक **आचार्य प्रफुल्ल चंद्र राय** ने **Bengal Chemical and Pharmaceutical Works** की स्थापना की — यह भारत की पहली औषधि निर्माण कंपनी थी।
- **1937: बनारस हिंदू विश्वविद्यालय (BHU)** में भारत का पहला **बी.फार्म (B.Pharm)** पाठ्यक्रम शुरू हुआ।

- **1940: Drugs and Cosmetics Act, 1940** पारित हुआ — दवाओं के निर्माण, बिक्री और गुणवत्ता को नियंत्रित करने हेतु।

---

4. स्वतंत्रता के बाद का काल (1947 के बाद)

- **1948:** भारत सरकार ने **Pharmacy Act, 1948** पारित किया — यह भारत में फार्मेसी पेशे का सबसे महत्वपूर्ण कानून है।
  - इसके तहत **Pharmacy Council of India (PCI)** की स्थापना की गई।
  - फार्मासिस्टों के **शिक्षा, पंजीकरण और अभ्यास** के नियम बनाए गए।
- **1954: All India Council for Technical Education (AICTE)** का गठन किया गया, जो तकनीकी और फार्मेसी शिक्षा की निगरानी करता है।
- **1960–1980:**
  - भारत में औषधि उद्योग का तेजी से विकास हुआ।
  - नई कंपनियाँ जैसे **Cipla, Ranbaxy, Hindustan Antibiotics** स्थापित हुईं।
  - देश में **Diploma (D.Pharm)** और **Bachelor of Pharmacy (B.Pharm)** पाठ्यक्रम प्रारंभ हुए।

---

5. आधुनिक काल (1980–वर्तमान तक)

- **1990 के दशक में** आर्थिक उदारीकरण के बाद भारतीय औषधि उद्योग ने विश्व स्तर पर प्रगति की।
- भारत को **"Pharmacy of the World" (विश्व की फार्मेसी)** कहा जाने लगा, क्योंकि यहाँ सस्ती और प्रभावी जेनेरिक दवाएँ बनती हैं।
- **2008 से: Doctor of Pharmacy (Pharm.D)** पाठ्यक्रम शुरू हुआ, जिससे क्लीनिकल फार्मेसी और रोगी देखभाल पर जोर दिया गया।
- **नवीन युग:** फार्मेसी क्षेत्र अब **फार्मास्यूटिकल टेक्नोलॉजी**, **क्लिनिकल फार्मेसी**, **रेगुलेटरी अफेयर्स**, **फार्माकोविजिलेंस**, और **रिसर्च एंड डेवलपमेंट** जैसे क्षेत्रों में विस्तार कर चुका है।

Multiple Choice Questions (MCQs)

1. भारत में पहला **B.Pharm कोर्स** किस विश्वविद्यालय में शुरू हुआ था?

   a) दिल्ली विश्वविद्यालय

   b) मद्रास विश्वविद्यालय

   c) बनारस हिंदू विश्वविद्यालय (BHU)

   d) मुंबई विश्वविद्यालय

   उत्तर: c) बनारस हिंदू विश्वविद्यालय (BHU)

2. **Pharmacy Act** भारत में किस वर्ष पारित हुआ था?

   a) 1940

   b) 1945

   c) 1948

   d) 1950

   उत्तर: c) 1948

3. **Pharmacy Council of India (PCI)** की स्थापना किस अधिनियम के अंतर्गत की गई?

   a) Drugs and Cosmetics Act, 1940

   b) Pharmacy Act, 1948

   c) Medical Council Act, 1956

   d) AICTE Act, 1954

   उत्तर: b) Pharmacy Act, 1948

4. भारत की पहली औषधि निर्माण कंपनी कौन सी थी?

   a) Cipla

   b) Ranbaxy

   c) Bengal Chemical and Pharmaceutical Works

   d) Dabur

   उत्तर: c) Bengal Chemical and Pharmaceutical Works

5. **Pharm.D (Doctor of Pharmacy)** पाठ्यक्रम भारत में कब शुरू हुआ?

   a) 1995

   b) 2000

   c) 2008

d) 2012

उत्तर: c) 2008

6. **Drugs and Cosmetics Act** भारत में कब पारित हुआ था?

a) 1935

b) 1940

c) 1954

d) 1948

उत्तर: b) 1940

7. भारत को **"Pharmacy of the World"** क्यों कहा जाता है?

a) क्योंकि यहाँ सबसे अधिक दवाएँ आयात होती हैं।

b) क्योंकि यहाँ सस्ती और प्रभावी जेनेरिक दवाएँ बनाई जाती हैं।

c) क्योंकि यहाँ केवल आयुर्वेदिक औषधियाँ बनती हैं।

d) उपरोक्त में से कोई नहीं।

उत्तर: b) क्योंकि यहाँ सस्ती और प्रभावी जेनेरिक दवाएँ बनाई जाती हैं।

II. Fill in the Blanks (रिक्त स्थान भरें)

1. भारत में फार्मेसी शिक्षा की शुरुआत _____ विश्वविद्यालय से हुई।

उत्तर: बनारस हिंदू विश्वविद्यालय (BHU)

2. **Pharmacy Act** _____ वर्ष में पारित हुआ।

उत्तर: 1948

3. **Pharmacy Council of India (PCI)** की स्थापना _____ के अंतर्गत हुई।

उत्तर: Pharmacy Act, 1948

4. भारत की पहली औषधि निर्माण कंपनी _____ थी।

उत्तर: Bengal Chemical and Pharmaceutical Works

5. **Drugs and Cosmetics Act** _____ वर्ष में पारित हुआ।

उत्तर: 1940

6. भारत को "Pharmacy of the World" कहा जाता है क्योंकि यह _____ दवाओं का प्रमुख उत्पादक देश है।

उत्तर: जेनेरिक (Generic)

7. **Pharm.D** कोर्स भारत में _____ वर्ष में शुरू हुआ।

   उत्तर: 2008

III. Short Answer Type Questions (संक्षिप्त उत्तर प्रश्न)

1. भारत में फार्मेसी व्यवसाय का आरंभ कैसे हुआ?

   उत्तर: भारत में फार्मेसी की शुरुआत प्राचीन काल में आयुर्वेद, यूनानी और सिद्ध पद्धतियों के अंतर्गत औषधि निर्माण से हुई। वैद्य स्वयं औषधियाँ बनाकर रोगियों को देते थे।

2. भारत की पहली फार्मेसी शिक्षा संस्था कौन सी थी?

   उत्तर: बनारस हिंदू विश्वविद्यालय (BHU) ने 1937 में पहला B.Pharm कोर्स शुरू किया।

3. Pharmacy Act, 1948 का मुख्य उद्देश्य क्या था?

   उत्तर: फार्मासिस्टों की शिक्षा, पंजीकरण, और व्यवसाय को नियंत्रित एवं मानकीकृत करना।

4. Pharmacy Council of India की स्थापना क्यों की गई?

   उत्तर: फार्मेसी शिक्षा और अभ्यास की गुणवत्ता सुनिश्चित करने हेतु।

5. भारत की पहली औषधि निर्माण कंपनी किसने स्थापित की?

   उत्तर: आचार्य प्रफुल्ल चंद्र राय ने 1932 में Bengal Chemical and Pharmaceutical Works की स्थापना की।

6. "Pharmacy of the World" का अर्थ क्या है?

   उत्तर: भारत विश्व में सबसे अधिक सस्ती और गुणवत्तापूर्ण जेनेरिक दवाओं का उत्पादन करता है, इसलिए इसे "Pharmacy of the World" कहा जाता है।

IV. Long Answer Type Questions (दीर्घ उत्तर प्रश्न)

1. भारत में फार्मेसी व्यवसाय के विकास का इतिहास वर्णन कीजिए।
2. Pharmacy Act, 1948 की विशेषताएँ बताइए।
3. भारत में फार्मेसी शिक्षा का विकास समझाइए।
4. Pharmacy Council of India (PCI) की भूमिका पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।